सत्संग परम संत हुजूर
पुष्कर दयाल जी महाराज
(दिनांक 24 अप्रैल 2016, फरीदाबाद, सै0–10)

!!राधा–स्वामी!!

हमको जब कभी तकलीफ आती है, तो हम भगवान को दोष देने लगते हैं। हे–भगवान तुमने मेरे साथ क्या किया? भगवान का इसमें कोई लेना देना नही है। ये सारे हमारे अपने ही कर्म हैं। जो हमको कभी सुख देते हैं, कभी दुख देते हैं।

कोई दुख सुख का नही दाता, तेरी है भूल सब।
कर्म अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब।।

जैसा हम बीज बोते हैं, वैसी ही हम फसल काटते हैं। इसमें भगवान का कोई लेना देना नही है। भगवान का दया का हाथ हमेशा हमारे ऊपर रहता है, वो कभी किसी के साथ भेदभाव नही करता है। ये सूरज है, क्या ये किसी के साथ भेदभाव करता है? ये सबको समान रोशनी देता है, और जिसने इस सूरज को बनाया है, वो क्यों भेदभाव करेगा। भेदभाव तो हम करते हैं, हमने ही जातियाँ बनाई, और हम ही जाति के ऊपर लडाई झगडा करते हैं। ये सब काल करवाता है। काल नही चाहता कोई जीव दयाल के पास जाए। क्योंकि अभी काल की दुकान चलनी है, और कब तक चलेगी? जब तक उस मालिक की मौज है। इसलिए कहते हैं तेरी रजा में हम भी रजा।

जो ठगेगा वो ठगा जाएगा, निस्संदेह आप।

अगर हम किसी को गाली देते हैं, तो हम उसको गाली नही देते हैं। अपने आपको गाली देते हैं। अगर हम किसी को ठगते हैं, तो हम उसको नही ठगते हैं, हम अपने आप को ठगते हैं।

जगदम्बा के गर्भ निवासी, हम सब जुडवे भाई।

इस संसार में जितने भी मनुष्य हैं, सब जुडवे भाई हैं। अगर हम अपने जुडवे भाई को ठगेंगें, तो हम खुद को ही ठगेंगे। मालिक ने कहा '' एकोहम वहुस्यामः'' यानि मैं एक से अनेक हो जाऊँ। तो हम उसी में थे, फिर अलग हो गए। हम सब उसी के बच्चे हैं। शेर का बच्चा शेर ही होता है। जब हम वही हैं तो फिर हम दूसरे को क्या ठगेंगे। ठगते हैं तो अपने आपको ही ठगते हैं।

अपनी करनी आप भरनी, पडती है संसार में।
राधास्वामी नाम भज, झगडों से बचके रह सदा।।

आप इस संसार में किसलिए आए हो? आप इस संसार में लेन देन के रिश्ते निभाने आए हो। अगर तुम्हारे पास एक भी कर्म नही होता, फिर तुमको इस संसार में आना ही नही था। लेकिन तुम आ गए, क्यों? क्योंकि तुम्हारे पिछले कर्म बाकी रह गए। और आपको इस लेन देन के रिश्ते को पूरा करना है। अगर तुमने भागने की कोशिश की, तो तुम्हारे और भी कर्म बढ गए। अगले जन्म के लिए आपने फिर रिर्जवेशन करा दिया। क्योंकि आपको जन्म मिला है, आपके कुछ कर्म बाकी रह गए हैं, उनको पूरा करना है। आप अपने कर्मों से भाग नही सकते हैं। अगर आपके घर में लड़की पैदा हुई है, तो आपको शादी करनी है उसकी। आपको उसका लेन देन पूरा करना है।

हमारे कपिला जी हैं, उनकी लडकी कहती है मैं अपने माँ बाप के ऊपर बोझ नही बनना चाहती हूँ। मेरी शादी एकदम साधारण तरीके से होनी चाहिए। कोई बैण्ड़ बाजा नही, कोई टैंण्ट नही, कोई लंगर नही। मैंने कहा आपके विचार तो बहुत अच्छे हैं क्यों ना ये शादी हम धाम पर करें। सब खुश हो गए, लेंकिन लेन देन से कहाँ बच पाओगे? जो देना है वो तो देना ही पडेगा। जहाँ उसका रिश्ता हो गया, वो बहुत हाई–फाई परिवार है। अब इस शादी का बजट 30 लाख से कम

नही पड़ रहा है। तो आप लेन देन से बच नही सकते। अगर आपने बचने की कोशिश की तो समझो आपने फिर से दोबारा इस संसार में आने का रिर्जवेशन फार्म भर दिया। आप बच नही पाओगे कर्मों से। इसलिए आपके मन में हमेशा यही रहना चाहिए कि मेरे सारे कर्म इसी जन्म में खत्म हो जाएँ। और मुझे फिर से आना नही पडे। One mark less, one year more. 33 मे से 32 नम्बर आ गए, तो फिर वही किताबें, वही स्कूल, वही अध्यापक। अगर टोकरी में एक कर्म भी बाकी रह गया तो उसे निपटाने के लिए एक जन्म और लेना पड़ता है।

आप एक बात अच्छी तरह समझ लो –दो ही चीज हैं इस संसार में। या तो संसार है, या मालिक है। बस! तीसरा कोई नही है। अब आपकी Choice है आप संसार को पकडो या मालिक को पकडो। एक तरफ संसार है, दूसरी तरफ मालिक है, और बीच में हम हैं। अगर हम संसार की तरफ मुँह करते हैं, तो पीठ मालिक की तरफ रही। अगर आपने मुँह मालिक की तरफ किया तो पीठ संसार की तरफ रही। अब आपके हाथ में है, आप कैसे बैठोगे? मनुष्य जन्म क्यों उत्तम माना जाता है? क्योंकि मनुष्य जन्म में ही मुक्ति है। मनुष्य को विवेक मिला हुआ है जिससे वह यह निणर्य कर सकता है कि क्या अच्छा है, क्या बुरा है? अगर आपको संसार अच्छा लगता है, तो आपको संसार में बार–2 आना पड़ेगा। जन्म मरण का चक्कर चलता रहेगा। अगर आप मालिक की तरफ चलते हैं तो आप जन्म मरण के चक्कर से मुक्त हो जाते हैं। अगर आपने मालिक को चुना, तो आपको जंगलों में या पहाडों पर जाने की जरूरत नही है। आपको संसार में रहकर ही मालिक को पाना है। हमारे चार आश्रम हैं, चारों आश्रमों में से गृहस्थ आश्रम सबसे उत्तम आश्रम है। क्योंकि मुक्ति सिर्फ गृहस्थ आश्रम में ही मिलती है। आपको गृहस्थ भी चलाना है और मालिक को भी याद करना है। आपको संसार में रहकर पीठ संसार की तरफ करनी है और मुँह मालिक की तरफ करना है। आपको संसार में रहते हुए संसार के सारे काम करने हैं, परंतु इनमें आसक्ति नहीं रखनी है, निरासक्त रहना है।

अगर किसी संत के पास कोई आदमी जाता है और वो 3 दिन से भूखा है। तो संत सबसे पहले उसको खाना खिलाएगा, पानी पिलाएगा। जब उसका संसार बन गया फिर उसको परमार्थ की तरफ ले जाएगा। लेकिन पहले उसका संसार बनाता है, क्योंकि संसार में रहकर ही मुक्ति पानी है उसको। आप खूब धन कमाओ, ईमानदारी से कमाओ, घर में हर सुविधा रखो। कोठी बनाओ, मोटर कार रखो। लेकिन इस संसार की किसी भी वस्तु को अपना मत समझो। अगर आपने इस संसार की किसी भी वस्तु कों अपना समझा, ये मेरी मोटर कार है, ये मेरी कोठी है। समझो आपका मुँह संसार की तरफ हो गया। आपको संसार में मुरगावी की तरह रहना है। कमल के फूल की तरह रहना है। कमल कीचड़ में उगता है, और हमेशा पानी के ऊपर रहता है। अगर पानी ऊपर आता है, तो वो और ऊपर हो जाता है। कमल कभी कीचड़ को छूता नही है। ये संसार एक कीचड़ है। इस संसार में रहकर, संसार की कीचड़ को छूना नही है। क्यों? क्योंकि अगर आपने छूआ तो आपका मुँह संसार की तरफ हो जाएगा। ये मेरा बेटा है, ये मेरी बेटी है। कौन किसका बेटा? कौन किसकी बेटी? मेरा पोता 18 साल मेरे साथ रहा। लेन देन पूरा हो गया, उसी टाईम निकल गया। ये सारा संसार लेन देन का है। हमें सारे रिश्ते निभाने हैं। बच्चों को पढाना है, लिखाना है, उनके घर बसाने हैं। लेकिन मन में ये रखना है, ये मेरा बेटा नही है, ये मेरी बेटी नही है। ये मालिक ने दिया है, उसी की अमानत है। ना जाने कब वापिस ले जाएगा, यही बात मन में रखनी है।

परमदयाल जी महाराज सत्संग दे रहे थे। किसी ने उनके कान में कुछ कहा और चला गया। महाराज जी सत्संग देते रहे। सत्संग खत्म करने के बाद उन्होने बताया, अभी जो एक आदमी आया, वो ये कह कर गया कि मेरा 17 साल का जबान लडका मर गया है। उन्होने सत्संग नही छोडा, क्योंकि वो समझ गए कि मालिक की अमानत थी, मालिक ने वापिस बुला लिया। इसलिए हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए और मन में ये रखना चाहिए, ये शरीर, ये संसार मेरा नही है, इस संसार में मेरा कुछ भी नही है। मैं खाली हाथ आया था और खाली हाथ ही जाऊँगा।

किसी ने युधिष्ठर से पूछा इस संसार में सबसे आश्चर्यजनक बात क्या है? उसने जबाब दिया कि हम सड़क पर जाते समय शव यात्रा देखते हैं। लेकिन हमको याद नही रहता कि एक दिन हमको भी जाना है। यही है सबसे आश्चार्यजनक बात।

भगवान कृष्ण कहते हैं अर्जुन को, अगर मरने के समय तुमको मेरा नाम याद रहेगा, तो तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी। अर्जुन कहता है इसमें कौन सी बड़ी बात है, मैं मरने के समय तुमको याद करूँगा। कृष्ण मुस्कुराए, ऐसा नही है, तुमने सारी जिंदगी जो किया है, तुमको अंत समय वही याद आएगा। अगर तुम सारी जिंदगी भगवान का नाम लेते, तो मरने के टाईम तुमको भगवान याद आयेगा। मेरी बीबी एक मिसाल है। जब उसका अंत समय आया तो मैं ऑफिस में था। मेरी Sister ने उससे पूछा क्या तुम्हारे पति को बुलाऊँ? उसने कहा नही। क्या तुम्हारे बेटे को बुलाऊँ? उसने कहा–नही। फिर किसको बुलाऊँ? उसने कहा सतगुरू को बुलाओ। अब देखो क्या याद आ गया उसको अंत समय में? पति भी संसार, बेटा भी संसार, पति भी झूठ, बेटा भी झूठ, फिर सच क्या है? सच है एक सतगुरू। इसलिए उसको सतगुरू ही याद आ गया। कबीर साहब भी ऐसा ही कहते हैं–"सतगुरू नाम ठिकाना है"। यही कहते हैं भगवान कृष्ण भी अर्जुन को कि तुम जो सारी जिंदगी करोगे, अंत समय में तुमको वही याद आएगा।

ये जो जन्म मिला है हमको, हमारे कुछ कर्म बाकी हैं उन्हे काटने के लिए मिला है। अगर हमारे पास कोई कर्म नही बचा होता, तो हम इस संसार में आते ही नही। हमारे कुछ कर्म बाकी रह गए, इसलिए हमको ये जन्म मिला। और हमको इन कर्मों को पूरा करके जाना ही पडेगा। अगर हम बचते हैं, तो हम और भी कर्म बनाते हैं। और अगले जन्म के लिए रिर्जवेशन फार्म भरते हैं। इसलिए ये जो जन्म मिला है हमको, मनुष्य जन्म बहुत भाग्यशाली जन्म है। लेकिन इस जन्म को हम कोढ़ियों के भाव लुटा रहे हैं। ये मनुष्य जन्म हमको इसलिए मिला है कि हम अपने कर्मों की टोकरी इस जन्म में खाली कर लें। मालिक ने यह एक मौका दिया है हमको। इसी जन्म में अपने सारे कर्मों को खत्म करो, और मेरे पास वापिस आ जाओ। अतः हमारी यही कोशिश होनी चाहिए कि इसी जन्म में हमारे सारे कर्म खत्म हो जाएँ और इस संसार के आवागमन से मुक्त हो जाएँ।

राधा स्वामी।